परिव्राजक हैदराबाद—१३०
सं०
तिथि

(हैदराबाद-दिवस पर शहीदों के यादगार अवसर लिखित)

हैदराबाद के शहीद

और

बन्दी-आर्य्य

फकत इस खता के सजावार हैं ये—
कि दर्दे-वतन की दवा चाहते हैं।

"निज़ाम हैदराबाद केवल भारत के देशी राज्यों में ही सब से अधिक गिरा हुआ—अनुन्नत राज नहीं, बल्कि यह सारे ब्रिटिश-साम्राज्य भर में एक सर्व प्रधान स्वेच्छाचारी राज्य है। मुझे विश्वास है कि निज़ाम राज्य के हज़ारों-लाखों प्रजा मेरी इस उक्ति का समर्थन करेंगे।"

—मि० सी० ई० गिबन

लेखक—
सदानन्द परिव्राजक

प्रकाशक—
परिव्राजक-कुटीर, स्वतन्त्रानन्द पुस्तकालय,
गुरु बाजार, अमृतसर।

प्रथमवार ४००० | २२ जनवरी सन् १९३९ | मूल्य)॥ सैकड़ा २॥)

पुस्तकालय आर्य समाज एडमन्टन
सं. .....
दिनांक .....

* ओ३म् *

आर्य-जगत के शहीद

आर्यसमाज ही नहीं, अपितु आर्य जगत का इतिहास ही शहीदों के पवित्र लाल खून से माँ वसुधा के विशाल वक्षस्थल पर लिखा गया है। प्राचीन काल से लेकर आज तक इस जाति के असंख्य नवनिहालों ने देश, धर्म और संसार के कल्याण के लिये अपने आपको हंसते हुए बलिदान चढ़ा कर आततायियों के कलंक कालिख को निज पवित्र रक्त से धोया है। इस जाति की गोद में उत्पन्न हुए साम्राट शिवी ने परप्राणी के रक्षार्थ अपने अंगप्रत्यंग काट २ कर अत्याचारियों को भेंट किया तो असुरो के नाश के लिये दधिची ने वृद्धावस्था में भी अपनी हड्डिया निकाल कर देवताओं को अर्पण किया। मौर्यध्वज ने अपने शीश पर आरे चलवाये तो एक निराश्रित अबला की रक्षा में जटायु ने अपना गर्दन कटाया। गुरू गोविन्दसिंह के मासुम बच्चे धर्म रक्षार्थ जिन्दे दीवार में चुने गये तो वीर बन्दा वैरागी ने अपना खाल उतरवाया। गुरुअर्जुनदेव जलती तवे पर तप कर खरे उतरें तो पृथ्वीराज चौहान गजनी की जेलों में सड़कर चमत्कृत हुए। असंख्य राजपूत वीर समरांगण में जूझे तो आर्य ललनायें जौहरव्रत लेकर जाति का मस्तक ऊँचा उठाया। राणा

प्रताप और शिवाजी, धूंधूपंत नाना साहब और तांतियाँ भील, मैनादेवी और लक्ष्मीबाई, आदि असंख्य मातृभूमि के सच्चे पूजारियों ने स्वतंत्रता के यज्ञ में अपनी जीवन-समिधा को भेंट किया तो धर्म की वेदी पर हकीकतराय और मुरलीमनोहर ने अपना सर कलम करवाया।

इतना ही नहीं वर्तमान आर्य समाज भी अपने जन्मकाल से ही देश जाति और धर्म की वेदी पर एक के बाद दूसरा असंख्य बलिदान देता आ रहा है। इसके अस्तित्व का निर्माण एवं विकास ही महर्षि दयानन्द के अपूर्व बलिदान से हुआ और बाद में इस पौधे को पं० लेखराम ने पेट में छुरे भोंकवाकर हुवा, श्रद्धानन्द ने सीने पर गोलियाँ खाकर, लाला लाजपतराय ने पुलिस के क्रूर लाठियों का निर्मम प्रहार सहकर तथा तरुण पथ-प्रदर्शक सरदार भगतसिंह फांसियों के तख्ते पर झूल कर अपने उष्णरक्त से सींचा।

इस प्रकार जीवन एवं देश के प्रत्येक क्षेत्र में आर्य समाज सदा से ही अपनी जलती जवानी की आहुतियाँ देता आ रहा है और भविष्य में भी देता रहेगा।

बलिदान का महत्व

बलिदान के पवित्र रक्त से ही दासता की कलंक कालिमा धोयी जा सकती है। इसी से जब किसी देश, जाति और समाज में निरंकुश सत्ताधारियों द्वारा असंख्य मूक-मानव पर घोर अमानुषिक अत्याचार प्रारम्भ होता है—तब महान्-आत्मायें

उसके प्रतिरोध में विद्रोह का झंडा लेकर आत्मोत्सर्ग के लिये प्रस्तुत होती हैं। इनके विशुद्ध-बलिदान से उस दलित मानव-समुदाय में महान् क्रान्ति का आविर्भाव होता है, जिसके द्वारा जर्जरित जातीय-जीवन में एक नवीन सृष्टि की रचना होती है, जिसमें समता, स्वतंत्रता और स्वावलम्बन एवं उत्सर्ग की भावना ओतप्रोत रहती है।

जब ऋषियों के पवित्र रक्त से अत्याचारी रावण का पाप-घड़ा भर गया, कंस की क्रूरता से मूक प्रजा की आत्मा दहल उठी, वेणु की स्वेच्छाचारिता और दानवों की दुष्टता से देवता व्याकुल हो उठे, लुई के लोमहर्षक काँड और जार की जालीम-शाही शासन चक्की में असंख्य देशभक्त और मानवप्रेमी निष्ठुरता पूर्वक कुचले गये, तभी सर्वत्र उन स्थानों में क्रांति की विकराल अग्नि धू २ कर धधक उठी, जिसमें पीड़ितों की पीड़ा और दैन्य, समाज की दासता और विषमता, सत्ताधारियों के अन्याय अनीति और अमानुषिक अनाचार सभी कुछ जल कर भस्म हुये।

आज भारतवर्ष में भी सर्वत्र शहीदों के बलिदान स्वरूप क्रान्ति की ज्वाला प्रचंडरुप से धधक रही हैं। यह पहले ब्रिटिश साम्राज्यवाद के निरंकुश पापाचार के फलस्वरूप ब्रिटिश भारत में और पश्चात् हमारे देशी नरेशों के दानवी कुशासन एवं निर्मम अनाचार के कारण रियासतों में भभक उठी है। सर्वत्र समान रूप से क्रान्ति की ज्वाला अपनी प्रलयंकरी जिव्हा लपलपा रही है, और शासक उसपर धूल, मट्टी और न जाने कैसी

गंदी चीजों से उस प्रचंड ज्वाला को बुझाने में लगे हैं, पर वह दिनों दिन बढ़ती ही जा रही है। जैसा कि उसका प्राकृतिक स्वाभाव है।

दबाने से नहीं दबती कहीं पर इन्कलाब हरगिज।
ये चिनगारी है वो जिसने नहीं सीखा कभी बुझना॥

निज़ामराज्य के आर्यशहीद

निज़ाम सरकार का दिनो दिन बढ़ता हुआ निरंकुश शोषण शासन, जघन्य साम्राज्यवादी कूटनीति एवं पैशाचिक-अत्याचार के परिणाम स्वरूप वहां भी सत्पुरुषों की आत्मा तड़प उठी। उन्होने शीश को हथेली पर लेकर समता, स्वतन्त्रता और न्याय के लिये जन समाज में सद्धर्म का प्रचार करने लगे। अधिकारियों को यह सहन नहीं हो सका। उन्होंने "फूट डाल कर—राज करो" इस घृणित साम्राज्यवादी नीति के अनुसार राज्य के प्रजा में साम्प्रदायिक-विष फैला कर हिन्दू-मुसलमानों के बीच फूट डालना आरम्भ किया। मुस्लिम रियासत होने से तथा मुस्लिम-समाज की धर्मान्धता के कारण उन्हें बहुत शीघ्र और अधिक मात्रा में सफलता भी मिली। इस मजहबी-फ़िसाद को बढ़ाने में प्रधान मन्त्री अकबरी हैदरी से लेकर सामान्य सिपाही तक लग गया। लाखों रुपया इसके लिये राज्य से खर्च होते। फल यह हुआ, राज्य के मुसलमान अधिकारियों के हाथ का कठपुतली बन मजहब के नाम पर गुमराह होकर स्वच्छन्द ताँडव करने लगे और ऐसा करने के लिये बाहर से गुण्डे बुलाये भी गये।

जिस प्रकार अभी पिछले दिनों सिन्ध में मुस्लिम लीगी सम्मेलन में लीगी नेताओं तथा पञ्जाब-बङ्गाल के प्रधान मन्त्रियों के साम्प्रदायिक बाजारु भाषण के परिणाम स्वरूप मुलतान का हृदय विदारक नजारा देखने को मिला, वैसे ही हैदराबाद में भी दिखाई दिया। जिसका दिल दहला देने वाला रोमाञ्चकारी वर्णन उस दिन सोलापुर के अखिल भारतीय आर्य काँग्रेस में पं० बन्शीलाल ने भी किया था।

हुपला के हुतात्मा दो आर्य और एक आर्य ललना

उदगीर जिलाँतर्गत हुपला नामक ग्राम में रहने वाले भीमराव पटेल के मित्र मानिकराव की चचेरी बहन को कुछ मुसलमान गुण्डे भगा ले गये। आर्य युवकों ने उस अबला की रक्षा की, इस पर अधिकारियों द्वारा उभाड़े गये मदान्ध गुण्डे उत्तेजित हो उठे और एक दिन दिन दहाड़े तीन बजे साम को सैकड़ों की संख्या में अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित होकर हुपला ग्राम में पहुँच कर भीमराव पटेल का मकान चारों तरफ से घेर लिया। उस समय मानिकराव भी उसी मकान में थे। गुण्डे पागलों की तरह घर के भीतर घुसे भीमराव और उसकी चाची को बन्दूक की गोलियों से उड़ा दिया। मानिकराव को पिशाच की तरह पकड़ कर नृशंसता पूर्वक हाथ और पैर काट डाला और बाद में भीमराव और उसकी चाची की लाश को इकट्ठा कर उसी घर में आग लगा कर, उस धधकते हुये प्रचंड ज्वाला में तड़पता हुआ मानिकराव को भी उठाकर झोंक दिया। इस प्रकार निजाम

अधिकारियों की घृणित षड्यन्त्र के परिणाम स्वरूप गुन्डों द्वारा एक असहाय अबला की रक्षा करने के कारण दो आर्य युवक तथा एक आर्य ललना का नृशंस बलिदान हुआ। जिसे याद कर पैशाचिकता भी कांप उठती है। यह कहा जाता है कि पुलिस को इस मामले का पहले से पता था, परन्तु वह रक्षा के लिये आगे न बढ़ी, बल्कि उसने इन पाशविक अत्याचारों के करने में गुन्डों को उभाड़ा और उनकी सहायता की।

धर्मवीर—वेदप्रकाश का खुलेबाजार वध

अधिकारियों के षड्यन्त्र द्वारा भड़काये गये, मुस्लिम गुण्डों ने उपरोक्त प्रकार के अनेकों पैशाचिक कांड किये। जिसे सुन कर निज़ाम सरकार के प्रति घृणा और क्षोभ पैदा हुये बिना नहीं रह सकता।

ता० ७—१२—३८ ई० की बात है, गंजोटी में आर्य समाज स्थापित किया जाता है। बस फिर क्या झट मुस्लिम दंगई उत्तेजित होकर आर्यों तथा आर्य मन्दिरों पर पत्थर फेंकने लगते हैं। पुलिस को सूचना दी गई, पर सब व्यर्थ। लगभग २५० राज्य के मुस्लिम गुन्डे जलूस की शक्ल में निकलते हैं और अपने सरदार दाउदखां के गले में हार पहनाते हैं तथा नागरिकों को डराते धमकाते हुये शहर में गश्त करते हैं। वेद प्रकाश आर्य समाज मन्दिर से अपने घर को लौट रहा था, मार्ग में मुसलमानों की उत्तेजित की हुई भीड़ उसे मिलती है, और उस बेगुनाह युवक को क्रूरता पूर्वक सरे बाजार हलाल कर दिया जाता है।

इतना ही नहीं उस शहीद की लाश आर्य समाज के मन्त्री के घर पर फेंक दी जाती है। लोगों ने देखा, और आँखें फाड़ २ कर देखा। एक अकेला निहत्था नवजवान गुन्डों के बीच में अभिमन्यु की तरह वीरता एवं प्रसन्नता के साथ मृत्यु का आलिंगन कर रहा है और गुन्डे उससे कह रहे हैं कि यदि तुम इस्लाम कबूल कर लो तो तुम्हारी जान बच सकती है।" पर उस वीर ने मर कर ही मौन भाषा में इसका उत्तर दिया। ऊफ! इन चन्द गुण्डों ने इस्लाम को भी कितना बदनाम किया? क्या बेगुनाह को छुरे भोकना, लड़की भगाना और साम्राज्यवादियों के इशारे पर जगह २ पर फिसाद करना ही इस्लाम परस्ती है? छीः इससे हजरत मुहम्मद की आत्मा कितनी तड़फती होंगी?

धर्मप्रकाश का बलिदान

ये कल्याणी समाज के उत्साही कार्य कर्त्ता थे, और नवयुवकों व्यायाम सिखाते थे। बस यही उनका अक्षम्य अपराध था। यारों को बर्दास्त न हो सका और धर्म प्रकाश को भी वेद प्रकाश की तरह शहीद बनाने का षड्यन्त्र रचा जाने लगा।

कल्याणी में ओ३म् का झंडा उतारने का जब उत्पात हुआ, तब मुस्लिम गुंडे और भी अधिक धृष्ट हो गये। समाज मंदिर तथा आर्यों के घर पर ईंट, पत्थर फेंक कर तथा समय २ पर बन्दूक आदि भी चला कर सब को तंग और भयभीत करने लग गये। जब डाइरेक्टर जनरल पुलिस मि० एस० टी० हालिसं ने गोली चलाने का जांच किया तो गुंडों ने बहाना बनाया कि

वे बन्दरों को डराने के लिये बन्दूक चलाते थे। इस बढ़ते हुए उपद्रव का नातीजा यह हुआ कि ता० २७-६-३८ ई० को म० धर्मप्रकाश जब आर्य समाज मंदिर से अकेला खाली हाथ लौट रहे थे, तब रास्ते में मुसलमानों के सशस्त्र भीड़ ने उस वीर को घेर लिया और तलवारों एवं छूरों से घातक आक्रमण कर धराशायी कर दिया। निज़ाम सरकार के पाप-स्वरूप यह पाँचवा वीर धर्मान्ध मुसलमानों द्वारा धर्म की वेदी पर बलिदान हुआ।

शहीद महादेव का आत्म-बलिदान

आर्यों का बलिदान इतने ही पर समाप्त नही हुआ, बल्कि इसी सिलसिले में अकोंलगा ग्राम के निवासी धर्मवीर महादेव को भी ता० १७-७-३८ को मेहरअली नामक एक धर्मान्ध मुस्लिम गुण्डे ने निर्दयता के साथ छुरे से हलाल कर दिया। उनका अपराध था कि वे सत्यार्थप्रकाश तथा आर्यसमाज की अन्य पुस्तके पढ़कर लोगों को सुनाया करते थे। एकबार कुछ गुण्डों ने जो उनपर आपत्ति करते थे, उनसे सत्यार्थप्रकाश छीन कर पुलिस को दे दिया। आर्यप्रतिनिधि सभा निज़ामराज्य के मंत्री ने पुलिस को मामले की रिपोर्ट की, इस पर उन्हें धमकी दी गई कि यदि वे अपने कार्य को बन्द नहीं करते तो खत्म कर दिये जायेगे और अन्त में यही हुआ। इतना ही नहीं, बल्कि स्थान २ पर आर्यों पर घातक प्रहार किया गया, और आज भी किया जा रहा है। किसी आर्य पर लाठियाँ पड़ती हैं तो किसी पर बेंतें। अधिकारियों द्वारा न्याय

तो दूर जाँच भी नहीं की जाती—यहाँ तक कि गरीबों का रिपोर्ट तक नहीं लिखी जाती, भला जब वे ही इन सारे काँडों को कराते हैं, फिर रिपोर्ट कौन लिखे ?

सच तो यह है कि इन हत्याओं का मूल कारण निज़ाम सरकार द्वारा उत्पन्न किये गये हिन्दू—मुस्लिम विद्वेष तथा फसादीमुस्लिम गुण्डों को कर्मचारियों द्वारा सहायता है। जब वहाँ की सरकार ही झगड़ा लगाकर हत्यारों को प्रोत्साहित करें—फिर वहां बेगुनाहों के खून का क्या शुमार ? मुझे विश्वास है कि—निज़ाम रियासत के एक करोड़ २२ लाख हिन्दू इस सत्य का समर्थन करेंगे।

अत्याचारों का मूल कारण

निज़ाम कर्मचारी धर्मान्ध मुस्लिम समाज के मज़हबी जनून को उभाड़ २ कर जो जगह २ हिन्दू-मुस्लिम फसाद और बेगुनाह आर्यों पर निर्दय अत्याचार कराते-फिरते हैं, उसका मूल कारण है—उनका राजनैतिक एवं आर्थिक स्वार्थ। जैसा कि पूर्व कुछ संकेत कर चुका हूँ। अपने साम्राज्यशाही शोषण-शासन को अक्षुण्ण रखने के लिये जो वे चाल चल रहे थे, दुर्भाग्य से आर्यसमाज का प्रचार और शुद्धि-अछूतोद्धार आदि धार्मिक कृत्य उसमें घोर बाधक हो रहा था, बस इसी से उनकी क्रूर दृष्टि आर्यसमाज पर पड़ी। प्रमाण के लिये—राज्य में केवल दस प्रतिशत मुसलमान हैं और लगभग ८९ प्रतिशत हिन्दू। मज़हबी जनून भड़का कर इन दस सैकड़े के मिल जाने तथा हिन्दू-मुस्लिम फसाद

करने से ही काम नहीं चलेगा। सम्भव है हैदराबाद के हिंदू, बङ्गाल के हिन्दू-युवकों की तरह मुस्लिम-गुण्डे और सरकार दोनों से मोर्चा लेने पर उतारू हो जांय, तब तो समस्या और भी टेढ़ी हो जायगी। अतः इसके साथ ही साथ अपने समर्थक मुसलमानों की संख्या भी बढ़ाते जाना चाहिये। इसी इरादे से निज़ाम सरकार खूब जोरों से तबलीग का काम बढ़ाने लगी। धर्म खाता का खर्च एक लाख से बढ़ कर चौदह लाख रुपया हो गया। हजारों मुल्ला-मौलवी इसके के लिये रखे गये, और प्रत्येक कर्मचारी इस्लाम का प्रचारक बना। जेल में, अस्पताल में, स्कूल में, गर्जे की सब जगह और सभी सम्भव उपायों द्वारा तबलीग का काम चला। सबसे पहले राज्य के २४७३२३० अछूतों को हड़पने का प्रयत्न हुआ, और पश्चात् राजनैतिक एवं आर्थिक दबाव द्वारा अन्य को।

निज़ाम सरकार का यह चाल धड़ल्ले से चल रहा था, पर अभाग्यवश आर्यसमाज के प्रचार से ज़बर्दस्त बाधा पड़ने लगी। ये लड़कियों को भगा कर मुसलमान बनाते। आर्यसमाजी झट उसे हवन कर शुद्ध कर लेते, और गुण्डों से अबलाओं की रक्षा भी करते। आर्यसमाज शुद्धि-अछूद्धार में हवन आदि करता था, इसलिये निज़ाम सरकार ने सामूहिक हवन को गैर कानूनी घोषित कर दिया, ताकि ये शुद्धि और अछूतोद्धार न कर सकें। समाज के प्रयत्न से अछूत भी उनके जाल से भागने लगे, हिन्दू सचेत होकर आर्य समाज की मदद करने लगे। निज़ाम सरकार अपने मन्सूबों पर इस प्रकार पानी फिरता देख

कर तड़प उठी और इसका मूलकारण आर्य समाज को समझ कर उस पर पैशाचिक अत्याचार आरम्भ कर दी। सीधा प्रहार करने पर संसार के सम्मुख पोल खुल जाता,—इसके लिये उसने साम्प्रदायिक और न जाने कैसी २ उलपटाँग इल्जामें लगाये। यही दशा उसने विशुद्ध राष्ट्रीय संस्था स्टेटकांग्रेस का भी किया।

इस प्रकार स्पष्ट है कि निज़ाम सरकार रियासतों में होने वाले राजनैतिक एवं आर्थिक क्रान्ति से बचने के लिये तथा अपने शोषण-शासन को स्थायी रखने के लिये ही राज्य में हिन्दू मुस्लिम विद्वेष तथा तबलीगी का काम फैलाया और इस चाल में बाधक होने के कारण ही आर्य समाज पर राक्षसी अत्याचार प्रारम्भ किया।* निज़ाम सरकार आज अपने राज्य में एक भी आर्य समाज तथा आर्य समाजी को फूटी आँखों से भी देखना नहीं चाहती, कारण यही उसके मार्ग में बाधक हैं। काँग्रेस तो उसके तबलीग वाले चाल को समझ कर भी, विवश हो कुछ नहीं कर सकती, पर आर्य समाज प्रत्येक क्षेत्र में समर्थ है। साथ ही राज्य में वहीं एक सङ्गठित संस्था भी है। काँग्रेस को सङ्गठित होते अभी देर लगेगी, क्यों कि मुस्लिम तो मजहब के नाम पर उसके साथ चिपके हैं और निजाम सरकार भी उन्हें भाँति २ की सुविधायें एवं प्रलोभन देकर चिपकाये हुये हैं।

---

* इस विषय में लेखक की लिखी—"निज़ामराज्य और आर्य समाज" पढ़ें। मू० -)॥ है।

इसके अलावा आर्य समाज एक आदर्श राजा का कर्तव्य एवं राजव्यवस्था का प्रतिपादन भी करता है। जिसके मुताबिक न तो हमारे निजाम साहब ही २ करोड़ ६४ लाख रु० प्रतिवर्ष प्रजा को भूखों मार कर ले सकते हैं और न आठ हजार रुपये मासिक हमारे प्रधान मन्त्री अकबर हैदरी साहब ही तथा न कभी ८॥ करोड़ रु० का अधिक भाग मोटे २ कर्मचारियों के पेट में ही जा सकता है। ये तो सभी प्रजा का धन है, और ये सभी प्रजा के सेवक हैं, न कि शासक और शोषक ? इस प्रकार सब तरह से आर्यसमाज ही उनके स्वछन्दता में बाधक हो रहा था, जिसके कारण उस पर पैशाचिक अत्याचार शुरू हुआ और पुलिस कर्मचारी उन्हें सब तरह से तंग करने लगे।

आर्यसमाजी होने मात्र से ही कई आर्यों को नौकरी से पृथक किया गया। सत्संग में पुलिस हस्तक्षेप करती, मुहर्रम में लेक्चर आदि नहीं होने दिया जाता, विवाह पर प्रतिबन्ध लगाया जाता, प्राइवेट स्कूलों को खोलने की आज्ञा नहीं दी जाती, समाज भी नहीं खोल सकते। व्यायामशाला नहीं खोलने दिया जाता, जो स्वास्थ रक्षा के लिये जरुरी है, हवन कुण्ड पर भी बान्दिश लगादी गई। नगर कीर्तन व उत्सव आदि की आज्ञा नहीं मिलती, हिन्दुओं को हिन्दू महासभा के अधिवेशन में भी नहीं जाने दिया जाता। अभी पिछले दिनों सत्तर वकीलों लाइसेंस ले लेने के लिये केस चलाया जा रहा है, इनका कसूर है कि ये कांग्रेस में भाग लिया था। आर्य कांग्रेस के लिये राज्य में आज्ञा नहीं मिली ? इतना ही नहीं अपितु बेकार और परेशान करने वाली तहकीकातें

समाजों से की जाती हैं। निलंगा समाज के मंत्री से पुलिस सब इन्सपेक्टर ने नीचे लिखे प्रश्न पूछे—

१—तुम किस तारीख को आर्य समाज में दाखिल हुए थे ?

२—तुमने सनातन धर्म कब छोड़ा ?

३—तुम्हे आर्य समाज का मंत्री किसने बनाया ?

४—तुम्हारे बतौर मंत्री के क्या २ कर्तव्य हैं ?

५—मंत्री शब्द के क्या अर्थ हैं ? और तुम इसकी क्या परिभाषा करते हो ?

६—निलंगा आर्य समाज में जो तुम व्याख्यान देते हो क्या उसके लिये आज्ञा तुमने प्राप्त की हैं ? यदि हां तो उसकी कॉपी भेजो, यदि नहीं तो क्यों नहीं ?

७—अब तक तुमने कितने और किस २ विषय पर व्याख्यान दिये है ? उन भाषणों को लिखकर दो और भविष्य में जब कभी लेक्चर दो तो उसकी कांपी दफ्तर में भेजो ?

पाठक वृन्द ! निजाम सरकार के कर्मचारियों की योग्यता और स्वेच्छाचारिता का पता आपको लग गया होगा पर इतना ही नहीं-अपितु—

१—खटगांव में कई मुस्लिम गुन्डों ने तीन आर्यसमाजियों के बलात् जनऊ तोड़ डाले, और पारले में पुलिस सब इंसपेक्टर द्वारा दो आर्यों का यज्ञोपवीत तोड़ा गया।

२—खंडेनी तालुका के पटेल और उसके भाई ने अहमदपुर के आर्य समाजियों को इसलिये पीटा कि उन्होंने उदगीर आर्य समाज के उत्सव में भाग लिया था।

३—निलंगा में बीदर जिले के ताल्लुकेदार के हुक्म से हवन-कुण्ड विध्वंश किया गया और आर्य समाज की सम्पत्ति जब्त की गई। केवल इस बहाने पर कि आर्यसमाज की प्रगतियाँ सरकार विरोधी तथा राजनैतिक हैं। पाठकों को निज़ाम पुलिस की मूर्खता जान कर हंसी आयेगी कि वह पिछले कुछ दिनों से हवन कुंड को मंदिर समझे बैठी थी।

इस प्रकार की हरजानी, मनमानी खूब होने लगी है, ताकि आर्य भयभीत होकर अपना धर्म कार्य बन्द करदें। जब इतने पर भी काम नहीं चला तब, उन्होंने चुन २ कर एक २ आर्यों पर झूठे २ मुकदमें चलाने लगें और आतंक एवं दमन द्वारा आर्य समाज को कुचलने लगे। पाठक! नीचे उसकी भी लिस्ट देखें कि कितने बेगुनाह आर्य जाली मुकदमों में फंसाये गये।

बेगुनाह बन्दी आर्य

(१) अम्बुलागा:—८—६—४७ को हसनखाँ नामक एक मुसलमान ने सत्यनप्पा को मारने के लिये तलवार से हमला किया, और म० सत्यनप्पा घायल होकर मर गये। पीड़ितों को सान्त्वना देने के बजाय पुलिस ने धारा १०४ लगा कर २८ आदमियों का चालान किया। अभियोग लगभग १८ मास तक चलता रहा।

(२) शिराधोन:—श्रीयुत भगवन्तराव पटेल और गोविन्दराव पटवारी इस अपराध पर नौकरी से सस्पैण्ड किये गये कि उन्होंने आर्य समाज क़लम के उत्सव में भाग लिया था।

(३) कर्होली:—दो मुसलमान वैदिक धर्म में दीक्षित हुये और उनका नाम राम और लक्ष्मण रक्खा गया था। पुलिस ने इस झूठे अपराध पर आर्य समाजियों पर अभियोग चलाया कि उन्होंने इन दोनों आदमियों को अपने अनुचित अधिकार में रक्खा था। फिर भी अदालत ने आर्य समाजियों को बरी कर दिया। पुलिस ने खबर देने वाले के विरुद्ध जिसने जान बूझ कर ग़लत सूचना दी थी, कोई कार्यवाही नहीं की। विपरीत इसके राम और लक्ष्मण को गिरफ्तार करके कल्याणी ले जाया गया; और उन्हें इस्लाम में फिर से वापिस करने के लिये बहुत मारा पीटा गया। फिर भी इन घृणित यत्नों में पुलिस बुरी तरह असफल रही। चूंकि दोनों वीर अपने धर्म पर दृढ़ थे।

(४) कल्याणी:—पुलिस ने आर्य समाज के मन्त्री को पीटा। मन्त्री जी को कुछ मास तक अनावश्यक कष्ट देने के अनन्तर बिना कोई कारण बतलाए केस वापिस ले लिया गया।

(५) अम्बुलगा:—२६४ दफा में ६ आर्य समाजियों के विरुद्ध एक फौजदारी का मुकद्दमा चलाया गया।

(६) अन्दूर:—कुछ मुसलमानों ने आर्य समाजियों को सताया और शिकायत करने पर उनमें से १५ पीड़ित आर्य समाजियों का १०४ धारा में चालान कर दिया।

(७) कुर्हाली:—पुलिस ने १५ व्यक्तियों पर केस चलाया, परन्तु सबूत न दे सकने के कारण केस लापिस ले लिया गया।

(८) आर्य प्रचारक पं० गणपतलाल जी पर १०४ धारा में एक झूठा केस चलाया गया। विद्वान् पं० ने ऐसे स्थान पर जहाँ न्याय की कोई आशा न थी सफाई पेश करने के स्थान में ३ मास के लिये जेल में जाना पसन्द किया।

(९) नन्ददुर्ग:—१०४ धारा में २० हिन्दू तथा आर्यों का चलान किया गया। इनमें ७० साल के वृद्ध और १२ वर्ष के बालक भी सम्मिलित हैं।

(१०) बेलार:—१०४ धारा में चिटगोपा की अदालत में ५५ आर्य और हिन्दुओं पर एक केस चलाया गया।

(११) औरद शाहजहांनी:—१०४ धारा में १६ आदमी गिरफ़्तार किये गये हैं, उनका केस चल रहा है।

(१२) उजनी और नन्ददुर्ग:—दफ़ा १४५ और १४६ में उजनी में १५ तथा नन्ददुर्ग में ११ हिन्दुओं व आर्यों पर केस चल रहा है।

(१३) तौसी—दफ़ा २६६ में ११ हिन्दुओं व आर्यों को गिरफ़्तार किया गया है।

(१४) इस ही ग्राम में रामा नामक हिन्दू की हत्या हुई थी, इस मुकद्दमे में भी ९ हिन्दू आर्यों को फाँसा गया है और रामा के पुत्र पर क़त्ल का जुर्म लगाया गया है।

(१५) अकोलगा:—महादेव की हत्या हुई है और अभी तक हत्यारे को दण्ड देने की कोई कार्यवाही नहीं की गई है।

(१६) वेद प्रकाश का क़त्ल हुआ। अपराधी साफ़ बच गया। परन्तु आर्य हिन्दुओं का महीनों तक रिमाण्ड ले २ कर तङ्ग किया जाता रहा।

(१७) गुलबर्गा:—४ आर्य १०, ४ और २ वर्ष की क़ैद में पड़े हैं।

(१८) नूलेगाँव:—नूलेगांव केस में ४ आर्य समाजियों को अपराधियों की सूची में सम्मिलित किया गया है।

(१९) श्री बलदेव जी, शङ्कर रेड्डी और देवी लाला जी पर १०७ धारा में मुकदमा चलाया गया था, सफाई देने के बजाय उन्होंने जेल में जाना पसन्द किया।

(२०) मुखेद:—चौ० श्रीराम जी जेल भेज दिये गए चूंकि उन्होंने हवन कुण्ड स्थापित करने का साहस किया था।

(२१) उदगीर:—बिना आज्ञा के दशहरा मनाने के अपराध में १६ आदमी जेल भेज दिये गए और ६० पर अभी केस चल रहा है। समस्त हिन्दू संसार में दशहरा मनाया जाता है।

(२२) मूरम:—बिना अपराध के या वारण्ट के १३ आर्य समाजी गिरफ़्तार किये गए और बिना किसी मुकदमे के उन्हें जेल भेज दिया गया। मुक़दमे में हाज़िर होने के पूर्व वे छोड़ भी दिये गये।

(२३) औसे दफ़ा १२३ और २६३ में ८ आर्य समाजियों

का चलान हुआ । अन्य छः आर्य समाजियों पर १०४ दफा में मुकदमा चला ।

(२४) धारूर:—इस जगह के कई आर्यसमाजी जेल में सड़ रहे हैं

(२५) मादी —:दफा १०४ में ४७ आदमियों पर अभियोग चलाया गया है ।

(२६) तुल्जापुर:—दफा १०४ में २४ आर्यों को चलान किया गया ।

(२७) साकोल:—२० आर्यों पर इस अपराध में मुकदमा चलाया गया कि उन्होंने मस्जिद के सामने बाजा बजाया था ।

(२८) जैनियों के किसी जलूस के सिलसिले में १२ आर्यों पर केस चलाया गया ।

(२९) लखनगांव में दफा १०४ में ४ आर्य समाजियों पर अभियोग चलाया गया ।

(३०) गंजोटी:—दफा १०४ में २० आर्यों का और दफा १२३ में ४ आर्यों का चलान किया गया है ।

(३१) निज़ामाबाद में ६ आर्यों पर केस चलाया ।

(३२) लातूर:—दफा १०४ में १६ आर्यों पर मुकदमा चलाया गया है और ४ बजाने के अपराध में जेल भेज दिएगए हैं ।

(३३) साकुर:—कई निर्दोष आर्यों पर मुकदमा चला कर उन्हें जेल भेज दिया गया है ।

(३४) टाका:—दफा १०४ में ६ आर्यों का चालान किया गया ।

(३५) तेर:—दफा १०४ में ११ आर्यों का चालान किया गया ।

(३६) राचैल—१४४ दफा में ११ आर्यों का चालान गया है ।

(३७) हैदराबाद—राजधानी में एक क़त्ल के मामले में लगभग १४ हिन्दुओं व आर्यों को फाँसा गया था और उन सब को ६ मुसलमानों व ३ हिन्दुओं की ज्यूरी ने प्रत्येक को २० २० वर्ष की सजा दी है। यद्यपि ज्यूरी के हिन्दू सदस्यों ने एक स्वर से अपराधियों को निर्दोष बतलाया था। और भी असंख्य उदाहरण इस प्रकार के हैं, जिनमें इस स्वेच्छाचारी राज्य में नादीरशाही अपने नग्न रूप में नाच रही है ।

इस प्रकार अब तक लगभग आठ सौ आर्य विभिन्न केसों में फंसा कर जेल वो कालापानी भेज दिये, और १६०० का मामला विचाराधीन है। अनेकों को जेल में ही काल का कलेवा बनाया गया और कह दिया गया कि ये हैजा से मर गये। अभी उस दिन सोलापुर कांग्रेस के ऐन मौके पर निर्दयता पूर्वक बीदर जेल में पं० श्यामलालजी प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा, निजाम हैदराबाद को बलिदान चढ़ाया गया, और उनकी लाश तब दी गई, जब उनके मामा ने लिखा कि इनकी मृत्यु स्वाभाविक रूप से हुई है, पर डाक्टरों ने देख कर साफ कहा—इनकी मृत्यु भूख और मार से हुई है। इतना ही नहीं उस दिन गुलबर्गा के मंत्री ने अपने १० साल की सजा के घटाने के लिये अपील की थी, उसे हाईकोर्ट ने बढ़ा कर फांसी की सजा कर दी। लालसिंह पर जेल के भीतर उस दिन इतनी मार पड़ी कि बेहोश हो गये, पर मार पड़ती गई। अपराध था, एक कैदी

को अच्छी तरह भोजन देने को कहा था। एक और आर्य को जेल के भीतर छूरा भोंका गया, वह खून से लतफद और अपराधी रंगे हाथ पकड़ा गया—पर पता नहीं आज तक क्या हुआ ?

कन्दहार तालुका में कुछ अछुतों को आर्यसमाजियों ने शुद्ध किया, इस अपराध में आर्यसमाज के ८ कार्यकर्त्ता जेल भेज दिये गये और इनपर अभियोग लगाया गया कि ये बागियाना खयालात रखते हैं।

गुलबर्गा में आर्य समाज का कार्यालय परिवर्तित किया गया तो पुलिस की तरफ से चेतावनी दी गयी कि आर्य समाज के जारी करने की आज्ञा क्यों नहीं ली गयी ?

चटगोपा के आर्य समाजी नागदेव की धर्मपत्नी का शव कूंए में मिला। सुनते हैं-इसके आर्य पति के पीछे पुलिस बुरी तरह पड़ी थी और वह कहीं अन्य जगह था, पुलिस वाले इस अकेली अबला को नित्य तंग करते थे।

धानव्य आर्य समाजी अपने को सुरक्षित न समझ कर हैदराबाद की रियासत से हिजरत कर रहे हैं।

एक पुलिसके मुलाजिम ने उजलय के मुसल्मानों से अलानिया तौर पर कहा कि आर्य समाजियों को कत्ल करदो, तुम्हें कोई गिरफ्तार न करेगा।

लातूर के तीन आर्यसमाजी दीवारों पर इश्तिहार चिपकाने के अपराध में गिरफ्तार कर लिये गये।

अहमदपुर आर्यसमाज के अध्यक्ष श्री मूर्तिरेड्डी को सेफ्टीबिल के शिकञ्जे में जकड़कर गिरफ्तार किया गया।

इन सब कार्यों का एक ही उद्देश्य है कि आतंक को दमन से भयभीत होकर राज्य से आर्य समाज का नामों निशान मिट जाय और राजकर्मचारियों के स्वार्थ सिद्धि का मार्ग निष्कंटक हो जाय, तथा उनकी सभी चालें अबाध रुप से चलती रहें—पर आज के जागृत जमाने में यह असम्भव है और आर्य समाज दमन और बलिदानों से नहीं डरता। इसका तो परम्परागत यही आदर्श रहा है।

निजाम सरकार का घृणित-षड्यन्त्र

निजाम सरकार द्वारा आर्यों पर सब प्रकार के पाशविक प्रयोग का इस्तेमाल करने पर भी जब राज्य में आर्यों का उत्साह नष्ट नहीं हुआ, और वे एक के बाद दूसरे अत्याचारों का मुकाबिला करने के लिए सामने डटे रहे तथा उनके इस अपूर्व बलिदान से विक्षुब्ध होकर सारे भारतवर्ष के आर्य समाजी सङ्गठित रूप से जब मोर्चा पर आने का निश्चय करने लगे, तब निजाम सरकार कुछ और ही षड्यन्त्र रचने लगी। चारों तरफ उसके टुकड़े पर पलने वाले चन्द पत्रकार और लीगी लीडरान यह प्रचार करने लगे कि निजाम हैदराबाद मुस्लिम राज्य है, इसी लिए बाहर से आकर आर्य समाज आदि गड़बड़ी कर रहे हैं। ये जगह २ हिन्दू-मुस्लिम झगड़े लगाते हैं, इत्यादि। दुर्भाग्य से आर्य समाज को खुदगर्जों ने खंडन-मंडन के कारण बदनाम भी कर रक्खा है। निज़ाम सरकार ने सोचा—चलो एक तीर से दो निशाने होंगे। भारत सरकार प्रिंसेस प्रोटेक्सन ऐक्ट

लागू कर देगी और राष्ट्रीय नेता एवं जनता भी मेरे साथ हो जायेगी। इसलिए इधर निज़ाम सरकार का हिन्दू-प्रेम जाग पड़ा, और झट हिन्दू विश्वविद्यालय को एक लाख रुपया दान भी कर दिया, ताकि सावरकर के मुकाबिले मालवीय जी जैसे हिन्दू नेता मेरे हमदर्द हो जाय। इसी लिए वायसराय, महात्मा गान्धी, पं० जवाहरलाल नेहरू आदि नेताओं के पास भी जाया गया, पर खेद एक भी चाल न चली और सब जगह से फटकार खाकर निराश ही लौटना पड़ा।

परन्तु सच पूछा जाय अब तक जितने बलिदान हुए तथा जेलों में सड़ रहे हैं—उनमें कितने प्रवासी और बाहर वाले हैं? और आर्य समाज आज नया काम तो कोई नहीं कर रहा? यह तो अपने स्वत्व एवं धर्म की रक्षा के लिये विदेशियों से मोर्चा लिया, कई हिन्दू देशी रियासतों में सङ्घर्ष किया। आज दुर्भाग्य से हैदराबाद के साम्राज्यवादी मुसलमान निकले तो इसका क्या इलाज है? मुसलमान होने के कारण ही तो निज़ाम सरकार अपने शोषण-शासन पर झट मजहब का चादर तान देती है, और कौमियत का बुर्का देखकर भोले भाले मुसलमान भूल जाते हैं, पर जरा बुर्का हटा कर देखें तो भीतर कितना भयानक लुटेरा साम्राज्यवाद छिपा हुआ है? जो इस्लाम का दुहाई देकर भी कुरान के विरुद्ध ५२ लाख रुपये सूद और पौने दो करोड़ रुपये के लगभग आबकारी विभाग (शराब आदि) से गरीब प्रजा का शोषण करता है। इस्लाम प्रेम का कितना सुन्दर उदाहरण है?

पर इन धर्मान्ध भोले मुसलमानों से कौन कहे? तभी तो निज़ाम सरकार अपने राज्य में हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य पैदा करने में सफल रही और जब कभी कोई सच्चा देशभक्त या राष्ट्रीय संस्था आदि ने साम्प्रदायिक झगड़ों के मूल कारण ढूंढ़ने के लिये प्रयत्नशील हुई, तभी उस पर झट ऐसा न करने के लिये प्रतिबन्ध लगा दिया गया। जैसा कि महाराष्ट्रीय सम्मेलनके उस प्रस्ताव पर आलोचना करना रोक दिया गया, जिसमें हिन्दू-मुस्लिम विद्वेष के कारणों को खोजने के सम्बन्ध में था। क्यों ऐसा हो—फिर तो निजाम सरकार का असली साम्राज्यवादी चेहरा ही प्रकट हो जाय।

अतएव आज निजाम सरकार कोई चाल चले पर देश अब धोखे में आने वाला नहीं। वो साम्राज्यवादियों के माया जाल से खूब परिचित है। यही कारण है कि आज हैदराबाद आर्य अन्दोलन से देश के सभी नेता व्यक्तिगत रुप से सहानुभूति रखते हैं। और आर्य समाज का बच्चा २ हैदराबाद में अपने धर्म तथा स्वत्व की रक्षा में अपना सर्वस्व होमने के लिये बाध्य हो गया है। उसकी लड़ाई न तो हैदराबाद तथा भारत के मुसलमानों से है, और न किसी मजहब से। आज आर्य समाज का मुकाबला तो सीधा निजाम सरकार के अत्याचारी शासन से है। जब तक अन्यायी व्यवस्था नहीं बदलता—तब तक आर्यों का युद्ध जारी रहेगा। अब तो—

देखना है जोर कितना बाजूए क़ातिल में है।
सरफरोसी की तमन्ना तो हमारे दिल में है॥

—***—